एक समर्पित रिपोर्टर, मधुर चतुर्वेदी

मेजर जनरल नीलेन्द्र कुमार

बाइस जुलाई 1952 को लखनऊ में जन्मे श्री मधुर चतुर्वेदी (सुपुत्रा श्री अविनाश चन्द्र एवं श्रीमती प्रमिला चतुर्वेदी) लखनऊ के सुप्रसिद्ध निर्मल चन्द्र जी (भूतपूर्व सभापति महासभा) के पौत्रा थे।

मधुर जी की शिक्षा लखनऊ विश्वविद्यालय में हुई। बी0ए0 की पढ़ाई के दौरान् ही उन्होंने लखनऊ में अंग्रेज़ी के प्रख्यात दैनिक 'पायनियर' में कार्य करना शुरू कर दिया। बतौर ट्रेनी जर्नलिस्ट उन्हें वरिष्ठ व अनुभवी संपादक एस0एन0 घोष से पत्राकारिता के बुनियादी सबक मिले। उनके वरिष्ठ सहयोगियों में उन्हें सिलवानो, सीमा मुस्तफा तथा दादा मुखर्जी से अखबारी दुनिया की कार्यप्रणाली का परिचय हासिल हुआ।

पायनियर से पत्राकारिता में प्रवेश के बाद कुछ महीनों के अंदर उनकी नियुक्ति पायनियर के सहयोगी हिन्दी दैनिक 'स्वतंत्रा भारत' की संपादकीय टीम में की गई। प्रदेश के तत्कालीन समाचार पत्राों में सर्वोपरि स्वतंत्रा भारत के संपादक प्रतिष्ठित एवं प्रकाण्ड साहित्यकार अशोक जी थे। उन्होंने मधुर की लगन व प्रतिभा का आंकलन करते हुए शीघ्र ही सम्पादकीय डेस्क से उनकी बदली बतौर रिपोर्टर कर दी। स्वतंत्रा भारत के इतिहास में लगभग तीस वर्षों के बाद श्री शिवसिंह 'सरोज' के बाद रिपोर्टर की नियुक्ति पाने वाले मधुर पहले पत्राकार थे। इस पोस्ट को हासिल करने से मधुर जी का नाम आनन–फानन में लखनऊ के अखबारी जगत में सर्वविदित हो गया।

स्वतंत्रा भारत में मधुर जी को शुरू में विश्वविद्यालय, शिक्षा तथा अपराध कवर करने का काम मिला। बीस वर्ष की कम उम्र में ही वह प्रदेश की राजधानी लखनऊ के सब पुलिस स्टेशनों से लेकर विश्वविद्यालय के कुलपति तथा विभागाध्यक्षों एवं डीनों से घनिष्ठ संबंध स्थापित करने में कामयाब हुए। प्रो वाइस चांसलर डॉ0 जी0एस0मिश्रा, विधि संकाय की प्रो0 श्रद्धा कुमारी तथा एल0एन0 टंडन, वाणिज्य के प्रोफेसर मेजर गुरुदत्त तथा नारी शिक्षा निकेतन की प्रिंसिपल स्वरूप कुमारी बख्शी आदि मधुर जी को सब खबरों से अपटुडेट रखते थे। ये सब उनके कॉलम 'विश्वविद्याालय की डायरी' में नियमित रूप में कोट किए जाते थे। मधुर जी की रिपोर्ट का यूनिवर्सिटी के स्टाफ रूप में तथा छात्राों की केन्टीन में दिलचस्पी तथा बेसब्री से इंतजार होता था।

बचपन से ही उन्होंने अपने मामा श्री सुरेन्द्र चतुर्वेदी से की कार्यप्रणाली को नजदीकी से देखा। वे नवभारत टाइम्स के लखनऊ ब्यूरो में विशेष संवाददाता थे। मधुर उनकी राजनीतिक जगत तथा जन–जीवन पर पकड़ तथा उसे पेश करने की खूबी से अविभूत थे। उनकी कार्यशैली, लेखन एवं

प्रस्तुतिकरण के आकलन से मधुर जी ने लाभदायक सबक सीखे। इस प्रकार अपना कैरियर उन्होंने सुरेन्द्र मामा की देख–रेख में ही शुरु किया।

किसी भी नए क्षेत्रा पर लिख सकने की उनकी खूबी को पहचानते हुए आशोक जी ने उन्हें 1974 में रक्षा–मंत्राालय द्वारा आयोजित सुरक्षा पत्राकारिता के कैम्प के लिए मध्य प्रदेश में महू धावनी स्थित इन्फेन्ट्री स्कूल तथा जोधपुर के कैम्प में शरीक होने के लिए भेजा।

1975 में मधुर जी अखिल भारतीय परीक्षा के आधार पर टाइम्स ऑफ इंडिया में प्रशिक्षित जर्नलिस्ट की ट्रेनिंग के लिए चुने गए। बोरी वन्दर स्थित टाइम्स हाऊस राष्ट्रीय स्तर पर चोटी के पत्राकार में महावीर अधिकारी, कमलेश्वर, धर्मवीर भारती, अरविन्द कुमार, कन्हैयालाल नन्दन तथा खुशवंत सिंह के दिए हुए उस्तादी नुस्खों का लाभ उठाने वाले मधुर जी अपने बैच के सबसे उदीयमान एवं तेज प्रशिक्षार्थियों में थे। उनकी रुझान राजनीतिक, नागरिक, सामाजिक, फिल्मी, रंगमंच तथा खेल जगत की पत्राकारिता में थी। इन विषयों पर उनकी पकड़ अनूठी तथा पैनी थी।

प्रशिक्षण काल पूरा हो जाने के बाद अगले इकतीस वर्ष उन्होंने बम्बई में नवभारत टाइम्स तथा दिल्ली में सान्ध्य टाइम्स में बतौर डिप्टी चीफ रिपोर्टर के काम किया। इस अवधि में विभिन्न संपादकों – अक्षय कुमार जैन, महावीर अधिकारी, आनन्द जैन, सत सोनी तथा मधुरेन्द्र सिन्हा आदि के वह विश्वासपात्रा तथा प्रमुख सहयोगियों में थे। रिपोर्टर के रूप में उन्हें मुम्बई कारपोरेशन, विधान सभा, दिल्ली असेम्बली, विश्वविद्यालय, पर्यटन, चिकित्सा तथा स्वास्थ्य, जन–जीवन और विभिन्न राजनीतिज्ञ दलों को कवर करने की जिम्मेदारी दी गई।

अपनी उपरोक्त बीट के अतिरिक्त खेलकूद, फिल्म तथा संगीत मधुर जी के प्रिय विषय थे। उन्होंने इनके बारे में सैकड़ों लेख, फीचर, इंटरव्यूज तथा रिपोर्ट लिखीं। अपने लेखों का शीर्षक भी स्वयं इतना आकर्षक देते थे कि उस पर नज़र पड़ने के बाद पाठक पढ़े बिना न रह सके। मसलन, दिल का मामला है कोई दिल्लगी नहीं, पेट का पत्थर तोड़ने की मशीन, हम चले जाएंगे, हरियाली रह जाएगी, शतरंज के खिलाड़ी : मात नहीं खायी। ऐसी सैकड़ों मिसाल दी जा सकती हैं।

जानी–मानी हस्तियों के इंटरव्यूह लेने का उनका अपना खास स्टाइल था। भारत की वर्तमान राष्ट्रपति तथा तत्कालीन महाराष्ट्र कांग्रेस की अध्यक्षा प्रतिभा पाटिल, एच0के0एल0 भगत, सज्जन कुमार, डी0यू0 के प्रेसीडेन्ट अरुण जेटली आदि के उनके साक्षात्कार लंबे समय तक पाठकों के दिमाग में बस गए।

इंडियन फेडरेान ऑफ वर्किंग जर्नलिस्ट के अध्यक्ष विक्रम राव ने मधुर की काबिलियत को देखते हुए उन्हें चेकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग में प्रशिक्षण के लिए नामजद किया।

मधुर जी की पत्राकारिता सही, खरी तथा संयमित होती थी। अपनी रिपोर्ट लिखने में वह पूरे निर्भीक थे। गहरी रिसर्च के बाद वह पूरी तरह से संतुलित खबर बनाते थे। कई समाचार–पत्राों, पत्रिाकाओं एवं

टी0वी0 प्रोग्राम पर नज़र डालने के बाद वह बहुत मेहनत से अपने विस्तृत नोट तैयार करते थे। श्री सत सोनी ने उनकी याद में उल्लेख किया कि जिस विषय पर अन्य कोई पत्राकार शायद कई दिनों में भी एक स्टोरी नहीं बना सकता, उसकी संपादक द्वारा मांग किए जाने पर मधुर जी ने कुछ ही घंटों में स्टोरी तैयार कर उनकी मेज पर रख दी।

मधुर जी अपने पेशे के प्रति पूरी तरह समर्पित व ईमानदार थे। पैंतीस वर्ष से अधिक अवधि के पत्राकार जीवन में उन्होंने कभी भी किसी समाचार के खंडन या स्पष्टीकरण देने का अवसर नहीं देखा। न कभी उन पर किसी की छवि या चरित्रा हनन करने का आरोप लगा। किसी भी खबर को देने से पहले सब संबंधित पक्षों का मत देने का उनका भरसक प्रयास रहता था।

नव्वे के दशक के आरम्भ के वर्षों तक मधुर जी देश के सबसे उदीयमान तथा प्रखर पत्राकारों की श्रेणी में गिने जाते थे। अखबारी दुनिया पर व्यवसायिक पकड़ तथा टेलिविजन के बढ़ते प्रभाव के संदर्भ में आगे बढ़ने की दौड़ में उनके समकालीन जर्नलिस्टों ने उनकी छवि को धूमिल करने के लिए कोई प्रयास बाकी नहीं छोड़ा। लेकिन मधुर जी अपनी कार्यनिष्ठा पर अटल रहे। उन्होंने न किसी की निन्दा की और न किसी गुटबाजी में कभी शामिल हुए।

मधुर जी की शख्सियत सीधी तथा सरल थी। वह मस्त मौला, मिलनसार प्रकृति के खुली तबियत के दोस्तबाज इन्सान थे। उलझनों व चक्करों से परे। हंसने तथा हंसाने के लिए हमेशा तत्पर। प्रेस क्लब के वह नियमित तथा अति लोकप्रिय सदस्यों में थे। उनके जैसे स्वाभिमानी पत्राकार कम नज़र आते हैं। अपने से बड़ों को सम्मान तथा छोटों को स्नेह देना उनकी आदत थी। स्पष्ट वक्ता तथा आत्मसम्मानी होने के बावजूद अपने संपादकों का उन्होंने सदैव आदर किया। जूनियर सहयोगियों में उन्होंने ताहिर जी तथा प्रमोद जोशी को सदैव प्रोत्साहन दिया। अपने संपादकों में श्री0एस0एन0 घोष, अशोक जी, आनंद जैन तथा सत सोनी जी की वह बहुत इज्जत करते थे।

जुलाई 2008 को दिल्ली में मधुर जी का अकाल निधन न केवल उनके परिवार, मित्राों एवं समाज वरन् हिन्दी पत्राकारिता जगत के लिए एक ऐसी क्षति है जिसका पूरा हो सकना शायद असम्भव है।